"Education through self-helf is our motto" —Karmaveer
Rayat Shikshan Sanstha's

Prof.Dr.N.D.Patil Mahavidyalaya, Malkapur- Perid

Tal-Shahuwadi, Dist-Kolhapur
Estd. Jun 1992

Affiliated to Shivaji University, Kolhapur
Reaccedited by NAAC with 'B' Grade (C.G.P.A.282)

One Day National Interdisciplinary Conference

On

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

4th January, 2020

Organized By

Department of English, Hindi, Marathi, Echonomics, History, Commerce and IQAC

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Rayat Shikshan Sanstha's

Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur (Perid)

One Day National Interdisciplinary Conference

On

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

Saturday, 4th January, 2020

Organized by

Department of English, Hindi, Marathi,
Economics, History, Commerce and IQAC

Editor

Dr. B. A. Sutar

Dr. S. P. Bansode

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

15	प्रा. सुरेखा फडतरे	समाज मनाचा हुंकार तणकट	81
16	प्रा.डॉ.आनंद वारके	समकालीन कवी लहू कानडे यांच्या कवितेतील महानगरीय जीवन	89
17	संगिता रामजी भगत	समकालीन मराठी नियतकालिकांची वाटचाल (प्रारंभ ते १९७५)	93
18	डॉ.काशिनाथ मोलनकर	समकालीन शैक्षणिक आधारवड कर्मवीर भाऊराव पाटील	99
19	शिवाजी रघुनाथ मोतीबोणे	समकालीन मराठी कथाविश्व	102
20	डॉ.काशिनाथ मोलनकर.	समकालीन चरित्र द्रष्टे लोकनेते शरद पवार साहेब	108
21	वृषाली मुळ्ये	समकालीन साहित्य प्रकार नाटक	111
22	मा.प्रा.डॉ.दत्तात्रय बारबोले	समकालीन ग्रामीण कथा	118
23	डॉ. बाळासो आण्णा सुतार	गावागाड्याचा बदलता अवकाश	124
24	डॉ. आर. डी. कांबळे,	समकालीन साहित्य आणिचारचौघीनाटकातील स्त्री प्रतिमा	132
25	प्रा. रेखा काशिनाथ पसाले.	समकालीन मराठी साहित्य आणि मराठी चित्रपट	135
26	डॉ. प्रियांका शंकर कुंभार	मराठी साहित्य आणि समकालीन अनुवादाचे स्वरुप	138
27	रोहिणी गजानन रेळेकर	प्रेषित : मानव आणि परग्रहवासीयांच्यातील भावबंध	145
28	डॉ. विजय विष्णू लोंढे	हिंदी दलित कहानी साहित्य की सीमाएँ	151
29	डॉ.पंडित बन्ने	सूनाप्रौद्योगिकी और इंटरनेट : जनसंचार का सशक्तमाध्यम	157
30	डॉ. कल्पनाकिरणपाटोळे	'एकजमीनअपनी' : नारी जीवन की संघर्षगाथा	159
31	डॉ. सिद्रामकृष्णा खोत	हिंदीकाव्य के शलाकाव्यक्तित्व: नागार्जुन	164
32	प्रा.नितीन हिंदुराव कुंभार	आज के युग में जनसंचार माध्यमों का योगदान (हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में)	167
33	डॉ. श्रीकांतपाटील	'झुनिया' उपन्यासमें मजदूर विमर्श	171
34	प्रा.डॉ.अजयकुमार कृष्णा कांबळे	आत्मसन्मान के लिए जूझती नारियाँ : एक परिदृष्य	173
35	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	ममताकालिया के उपन्यासो में नारी	176
36	प्रा.भिमाशंकर लक्ष्मण गायकवाड	थ्हंदी पत्रकारीता का विकास	178
37	प्रा.अभिजीत कबीर शेवडे	छलित चेतना एवं दलित साहित्य की अवधारणा	181
38	डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील	दोहरा अभिशाप' पर स्त्री विमर्शमूलक वैचारिक मंथन	185
39	डॉ.मालोजी अर्जुन जगताप	दलित समाज के प्रतिसवर्णों की मानसिकता का यथार्थ अंकन :- आगे रास्ता बंद है	188
40	प्रा. नीता पोपट साठे	"डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के भूमि की ओर' नाटक में चित्रित सामाजिक	191

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

आज के युग में जनसंचार माध्यमों का योगदान
(हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में)

प्रा.नितीन हिंदुराव कुंभार
हिंदी विभाग
ए.एस.सी.कॉलेज,रामानंदनगर(वुर्ली)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह ध्वनि, संकेत तथा भाषादि के माध्यम से आपसी संपर्क करता है। अतः भाषा अभिव्यक्ति के आदान- प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। यही भाषा मानक रूप ग्रहण करके जनसंचार की भाषा वन जाती है। जिसमें हमारे सारे क्रियाकलाप प्रस्तुत होने लगते हैं।

जनसंचार में 'संचार' शब्द संस्कृत के 'चर' धातु से बना है, जिसका अर्थ है –चलना। अर्थात जव हम भाव, विचार, संदेश, सूचना या जानकारी दूसरों तक पहुंचाते हैं और यह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर चलती है तो वह जनसंचार कहलाती है। यह प्रक्रिया जिन साधनों के द्वारा पहुंचाई जाती है उसे जनसंचार माध्यम कहते हैं, जिसका संवंध अंग्रेजी के Mass Media (मास मीडिया) से है।

जनसंचार माध्यमों का इतिहास अति प्राचीन है। वह मानव जीवन से अनादि काल से जुड़ा हुआ है ।भाषा निर्माण के पूर्व मानव विविध संकेतों के माध्यम से जनसंचार करता था। विश्व के सभी धार्मिक तथा पौराणिक ग्रंथों में देवदूतों के माध्यम से विश्वजन कल्याण संदेश के संचार के उल्लेख मिलते है। भारत में संगीत, नृत्य, नाटिका, लोकरंगमंच,गीत,लोकनृत्य, भजन, कीर्तन, आदि जनसंचार के माध्यम रहे हैं। भारत पर आधिपत्य जमानेवाले विभिन्न शासकों ने भी समय - समय पर जनसंचार के माध्यमों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः सभ्यता के विकास के साथ - साथ आधुनिक युग में जनसंचार माध्यमों का व्यापक विकास, प्रचार - प्रसार होता हुआ दिखाई देता है। आधुनिक युग में जनसंचार के विभिन्न माध्यम भूमिका निभा रहे हैं, जिन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है –

1.मुद्रित संचार माध्यम - जिसमें समाचार पत्र पत्रिकाएं, जर्नल, पुस्तकें, पोस्टर आदि का समावेश होता है।

2. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम - जिसमें श्रव्य रूप में –आकाशवाणी, टेपरिकॉर्डर, ऑडियो कैसेट आदिआते हैं तो श्रव्य दृश्य के रूप में –दूरदर्शन, सिनेमा, वीडियो कैसेट आदि आते हैं।

3. सूचना प्रौद्योगिक साधन - जिसमें संगणक इंटरनेट, ई–मेल, फैक्स, दूरध्वनी, भ्रमणध्वनी आदि का समावेश होता है। परंतु जनसंचार के प्रमुख तथा प्रभावी माध्यम समाचार पत्र– पत्रिकाएं, आकाशवाणी, दूरदर्शन, विज्ञापन, संगणक आदि ही माने जाते हैं।

उपर्युक्त सभी संचार माध्यमों में हिंदी का व्यापक प्रयोग और परिनिष्ठित रूप अपनाया जाता है।

समाचार पत्र - पत्रिकाएं –

समाचार पत्र - पत्रिकाएं जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है, जिसमें अन्य संचार माध्यमों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीयता होती है। भारत में जनसंचार माध्यमों के विकास के रूप में समाचार पत्र-पत्रिकाओं का स्थान प्रमुख है। हिंदी के विकास में समाचार पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। संपादक पंडित युगल किशोर

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner